

मांडलिक पुं. (तत्.) 1. मंडल का प्रधान प्रशासक
2. वह छोटा राजा जो किसी चक्रवर्ती या बड़े राजा के अधीन हो और उसे कर देता हो 3. शासन का कार्य वि. मंडल संबंधी।

मांडवी स्त्री. (तत्.) राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जिसका विवाह राजा दशरथ के पुत्र भरत से हुआ था।

मांडूक पुं. (तद्.) प्राचीन काल के एक प्रकार के ब्राह्मण जो वैदिक मंडूक शाखा के अंतर्गत होते थे।

मांडूक्य पुं. (तत्.) एक प्रसिद्ध उपनिषद् वि. मंडूक संबंधी।

मांढा पुं. (तत्.) स्त्रियों का पीहर, मायका।

मांत्रिक पुं. (तत्.) 1. वह जो मंत्रों का पाठ करने में पारंगत हो 2. वह जो मंत्र-तंत्र आदि का पाठ करने में पारंगत हो 2. वह जो मंत्र-तंत्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

मांथर्य पुं. (तत्.) 1. मंथर होने की अवस्था या भाव, मंथरता, घीमापन 2. सुस्ती।

मांदार वि. (तत्.) मंदार (मदार) संबंधी।

मांध पुं. (तत्.) 1. मंद होने की अवस्था या भाव, मंदता जैसे- अग्नि-मांध 2. दुर्बलता 3. कमी, न्यूनता 4. बीमारी, रोग 5. मूर्खता।

मांधाता पुं. (तत्.) अयोध्या का एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा जो दिलीप के पूर्वजों में से था।

मांस पुं. (तत्.) 1. मनुष्यों तथा जीव-जंतुओं के शरीर का हड्डी, नस, चमड़ी, रक्त आदि से भिन्न अंश जो रक्त वर्ण का तथा लचीला होता है, आमिष, गोश्त 2. कुछ विशिष्ट पशु-पक्षियों का मांस जिसे मनुष्य खाद्य समझता है जैसे- बकरे या मुर्गे का मांस 3. मास (महीना)।

मांसकारी पुं. (तत्.) रक्त, लहू।

मांसखोर वि. (देश.) मांसाहारी, मांस खाने वाला।

मांस-ग्रंथि स्त्री. (तद्.) शरीर के विभिन्न अंगों में निकलने वाली मांस की पीठ।

मांसज वि. (तद्.) मांस से उत्पन्न होने वाला।

मांस-धरा स्त्री. (तत्.) सुश्रुत के अनुसार शरीर की त्वचा की सातवीं तह, स्थूलापर।

मांस-पिंड पुं. (तत्.) 1. शरीर, देह 2. मांस का टुकड़ा या लोथड़ा।

मांस-पिंडी स्त्री. (तत्.) शरीर के अंदर रहने वाली मांस की गाँठ।

मांस-पेशी स्त्री. (तत्.) शरीर के अंदर होने वाली झिल्ली तथा रेशों के आकार का मांस पिंड जिसका मुख्य कृत्य गति उत्पन्न करना होता है।

मांस-फल पुं. (देश.) तरबूज।

मांस-भक्षी वि. (तत्.) मांस खानेवाला, मांसाहारी।

मांसभोजी वि. (तत्.) मांसाहारी।

मांस-योनि पुं. (तत्.) रक्त और मांस से उत्पन्न जीव।

मांस-रज्जु स्त्री. (तत्.) 1. सुश्रुत के अनुसार शरीर के अंदर होने वाले स्नायु जिनसे मांस बँधा रहता है 2. मांस का रसा, शोरबा।

मांसल वि. (तत्.) 1. (शरीर का कोई अंग) जो मांस से अच्छी तरह भरा हो 2. जिसमें मांस या उसकी तरह के गूदे की अधिकता हो, गुदगुदा 3. मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट 4. दृढ़, पक्का, मजबूत पुं. 1. गौड़ी रीति का एक गुण 2. उड़द।

मांसलता स्त्री. (तत्.) 1. मांस से भरे होने की अवस्था या भाव 2. बहुत अधिक मोटे-ताजे तथा हृष्ट-पुष्ट होने की अवस्था या भाव।

मांस-विक्रयी पुं. (तत्.) 1. वह जो मांस बेचता हो, कसाब 2. वह जो धन के लोभ में अपनी संतान किसी के हाथ बेचता हो।

मांस वृद्धि स्त्री. (तत्.) शरीर के किसी अंग के मांस का बढ़ जाना जैसे- घेघा, फील पाँव आदि।

मांस-समुद्भवा स्त्री. (तत्.) चरबी।

मांसाद् वि. (तत्.) जो मांस खाता हो, मांस भक्षक पुं. राक्षस।

मांसादन पुं. (तत्.) मांस खाने की क्रिया या भाव।

मांसादी वि. (तत्.) मांस खाने वाला, मांसाहारी।